दिसम्बर सन १९५६

सुरुचमार्ग

•

मासिक पत्र

वार्षिक मू० १)

एक अंक =)

सम्पादक

वैद्य श्यामलाल 'सुहृद' एच० एल० एम० एस०

श्री पं० ठाकुरदत्तशर्मा वैद्य के प्रगाढ़ परिशीलन के फल

ये उत्कृष्ट योग

'याकूती नवरत्नी' जीवनीय हृद्य रसायन मू० ३२ गोली ५)	**'दिलानन्द'** रक्त सञ्चार संशमन मू० ६४ गोली ४)	**'अशूगरी'** मधुमेह नाशक मू० ३२ गोली ४)
'जीस्ट रस' वेदना नाशक श्रन्तिहर मू० ६४ गोली २)	**'शोधक'** स्वास्थ्य निर्माता दोषहर मू० ६४ गोली ४)	**जवाहर सोना मोती** क्षय शोक नाशक मू० ३ साशे ५)
ब्राह्मी' कस्तूरी बटी' मेधाकर मस्तिष्क रसा० मू० ३२ गोली २॥)	**'लोह रसायन'** यकृद्दोषहर रक्तप्रसादन मू० प्रति शीशी २)	**'करकोल'** पाचन शक्ति रसायन मू० ६४ गोली २)

नोट—(१) स्वास्थ्य, बल बढ़ाने के इच्छुक मँगवाकर सेवन करें और अपने परिवार तथा बन्धुवर्ग को सेवन करवाएँ, जिससे देशवासी आरोग्य तथा पराक्रम प्राप्त करें।

(२) डाक्टर, वैद्य, हकीम, इन्हें अपने रोगियों को देकर यश और पुण्य के भागी बनें।

(३) बड़ा सूचीपत्र नीचे के पते से मुफ्त मँगाकर देखें।

अमृतधारा फार्मेसी प्राईवेट लिमिटेड,

देहरादून

सुखमार्ग

शारीरिक, आत्मिक, मानसिक तथा वैज्ञानिक आदि विषयों का

मासिक पत्र

'सुखमार्ग' के अनुसरण बिन जीवन सफल किसका रहा।
सुन्दर सरल 'सुखमार्ग' यह सुखमार्ग को दर्शा रहा॥

वर्ष ३३	अलीगढ़, दिसम्बर सन ५६	अङ्क १२

तेज और बल

तेजोऽसि तेजो मयिधेहि।
बल मसि बलं मयिधेहि ॥यजु०॥

अर्थः—हे परमात्मन् (तेजोऽसि) तू तेजः स्वरुप है (मयि) मुझ भक्त में भी तेज को धारण कर। तू बल रुप है (मयि) मुझ में भी (बलं धेहि) वल को धारण कर। बस ? यही प्रार्थना है।

स्वामी ब्रह्मानन्द दंडी गुरुकुल, ऐटा।

हमारी दुर्दशा

[श्री चन्द्रानन्द वानप्रस्थी, पूर्व चाँदकरण शारदा, अजमेर]

इस समय भारत में कहीं सूखा है तो कहीं बाढ़ आ रही है, कहीं धरती हिलती है तो कहीं बिजली गिरती है हर तरह से दुर्दशा हो रही है। गौ, बालक, विधवा बूढ़े और विद्वान इनकी कोई कदर नहीं है सब अपने २ रागों में मस्त हैं।

गौ-वंश ह्रास के परिणाम को ही ले लीजिये। भारत में गौहत्या बन्द न करने से कितना भयंकर परिणाम हुआ है, न्यूजीलेन्ड में प्रत्येक गाय के पीछे औसत तौर पर दैनिक तीन पाव दूध पड़ता है, तो भारत में तीन तोला। वहाँ मक्खन वार्षिक प्रति गाय पर ७ पाउड पड़ता है, भारत में दो पाउड। वहां प्रत्येक व्यक्ति के पीछे मासिक ५६ औंस दूध आता है। तो यहाँ केवल ७ औंस मासिक।

दूध, घी के अभाव से भारतियों की जीवन शक्ति इतनी क्षीण हो गई है कि न्यूजीलेण्ड से औसतन प्रत्येक व्यक्ति का वजन १५४ पाउड है परन्तु भारत में १२० पाउड है। वहां प्रत्येक व्यक्ति की ऊँचाई ७० इंच है, परन्तु यहाँ ६६ इंच है; वहाँ आयु ६५ वर्ष है परन्तु यहाँ २७ वर्ष है। वहाँ मृत्यु संख्या प्रति हजार ६.२ है, यहां २१.१८, वहां क्षय रोग से मृत्यु संख्या प्रति लाख ३६ है। यहाँ २३२, वहां बालमृत्यु प्रति हजार ३१ है परन्तु यहाँ १६७ प्रति हजार है। हाल में ही डाक्टर राधाकमल मुखर्जी, सदस्य भारतीय राज्य सभा ने भारतीय बजट पर बहस करते हुये लिखा है कि भारत का बजट सदा गरीबी स्वभाव में रहनेवाले निर्धन व्यक्तियों का बजट रहता है।

हमारे देश में दालें, मूंग, मोठ, उड़द, चने इत्यादि तो बहुत होते हैं परन्तु जीवन-दायिनी शरीर को रक्षा करने वाली खुराक कम होती है। खुराक में जे-बी-सी-डी-ई विटामिनों की अत्यन्त आवश्यकता है। "केलरीज" भी भोजन में काफी मात्रा में होने चाहिये लोग टेक्सों से दबे जा रहे हैं और इधर अमेरिका की सैनिक सहायता से पाकिस्तान अकड़ रहा है और काश्मीर के मामले को लेकर भारत से लड़ने के लिये तैयार बैठा है।

अतः भारत भी सतर्क हो गया है और उसने बगदाद संधियों को तथा फौजी तैयारियों को सामना रखकर प्रति रक्षा के उपाय ढूंढ निकाले हैं और भारत की पाकिस्तानी आक्रमणों से रक्षा करने के लिये परियाप्त धन व्यय कर रहा है। इस समय भारत की दुर्दशा मिटाने का एक मात्र उपाय यही है कि हम सारे भारत को एक माने और उसी मात्र भूमि की सेवा में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दें।

———

क्या मोतियाबिन्दु नहीं जा सकता

[ले० स्वामी ऋतानन्द जी, तपोवन]

मोतिया विन्दु, केटरेक्ट Cataract लिङ्गनाश, काच नजूल उल्माय आदि २ नामों से बोलते हैं यह नेत्र के अन्तः पटल का दृष्टिगत रोग है । दृष्टिगत रोग नौ प्रकार के होते हैं। तीन साध्य, तीन याप्य और तीन असाध्य, प्रथम तिमिर रोग होता है तब काच रोग होता है । काँच की उपेक्षा करने से पुनः लिङ्ग नाश रोग हो जाता है। लिङ्गनाश रोग सात प्रकार का कहा गया है। गाढ़े जल की बूंद नेत्र में भीतर से मोती की तरह चमकती है तथा उसकी आभा भी मोती के समान ही होती है, अतः इसको लोक व्यवहार में मोतिया विन्दु कहते हैं । अँग्रेजी कोष में (water fall) वह स्थान जहाँ पानी गिरता हो लिखा हुआ है क्योंकि इस रोग में पानी जमा हो जाता है अतः केटरेक्ट Cataract कहते हैं दृष्टि को लिङ्ग कहते हैं और इस रोग में दृष्टि का नाश हो जाता है अतः संस्कृत में इसको लिङ्ग नाश कहते हैं । यूनानी हकीम इस रोग को नजूल उल्माय कहते हैं। उनका मत है कि जब नजला कानों पर गिरता है तो मनुष्य बहरा हो जाता है। श्वासन संस्थान में गिरता है तो श्वास रोग हो जाता है। जब नजला आखों में उतरता है तो मोतिया विन्दु का रूप धारण कर लेता है मोतिया विन्दु बुढ़ापे का रोग है। प्रायः ४५ वर्ष के पश्चात ही होता है। कोई कोई मोतिया विन्दु इस प्रकार का होता है कि उसमें कुछ निगाह तो अवश्य कम हो जाती है। किन्तु मनुष्य अन्धा नहीं होता, चलना फिरना तथा साधारण लिखने का कार्य होता रहता है। मोटे अक्षर पढ़ भी लिये जाते हैं अर्थात इस प्रकार के मोतिया विन्दु में स्थूल रचना दृष्टि पड़ती है सूक्ष्म रचना नहीं देखी जा सकती।

मोतियाविन्दु होने के कारण:- रक्त की कमी, अत्यन्त मैथुन, नजला, जुकाम को बहुत दिन तक बने रहने से सूक्ष्म अक्षरों को बहुत देर तक लेटे लेटे पढ़ने से, कम प्रकाश में पढ़ने से, सूजाक, आतशिक होकर रक्त बिगड़ जाने से, मिथ्या तथा विषमाहार विहार से प्रायः मनुष्यों के मोतियाविन्दु के होने की सम्भावना होती है जब मोतिया विन्दु होने को होता है तो धूप का रंग बदला सा प्रतीत होता है। मक्खी मच्छर तिलोले से नजर आते हैं। दृष्टि विह्वल हो जाती है पुनः शनैः शनैः कम होकर मनुष्य नितान्त अन्धा हो जाता है मोतियाविन्दु शस्त्र साध्य रोग है।

प्रायः लोग समझते हैं कि मोतिया-विन्दु का औपरेशन प्राचीन समय में नहीं होता था यह तो एलोपैथिक डाक्टरों की दैन है। ऐसा मानना बड़ी भारी भूल है । क्योंकि आयुर्वेद के प्राचीन ग्रन्थ सुश्रुत के शल्य शालक्य प्रकरण में मोतिया विन्दु के औपरेशन की विधि बड़े स्पष्ट तथा विशद् रूप में दी गई है। लेख बढ़ जाने से उन श्लोकों को नहीं लिखा । और न औपरेशन की विधि पढ़ने से सीखी

ही जा सकती है। अब जन साधारण के लाभार्थ मोतियाविन्दु रोग को रोकने तथा दूर करने के लिये कुछ उपयोगी प्रयोग लिखे जाते हैं, ताकि मोतियाविन्दु से पीड़ित रोगी उनसे यथेष्ट लाभान्वित हों।

प्रथम प्रयोगः— हरी गिलोय का स्वरस १ तोला, सैंधानियम १ माशे शहद असली १मा०, इनको पत्थर के खरल में एक घंटे भली प्रकार घोटकर किसी डाटदार शीशी में रखले प्रातः साँय ताम्बे की सलाई से नेत्र में अन्दर लगावे। इसके लगाने से तिमिर, काच (मोतिया विन्दु) एवं काले तथा सफेद नाम में होने वाले सभी रोग जाते रहते हैं।

द्वितीय प्रयोगः— केसर ४ रत्ती अफीम १मा०, मिश्री १ माशा फिटकरी फूला २ मा०, समुद्रफेन २मा० नवसादर २ मा० भीमसैनी कपूर १ मा० नीला थोता २ मा० जंगार २ मा० सबको कूट पीस तथा छानकर सुर्मा बनाले प्रातः साँय ताम्बे की सलाई से लगावे अतीव उपयोगी हैं।

तृतीय प्रयोगः— पारा १ माशा, शीतल चीनी ४ मा०, नील के बीज ३ माशा, सुरमा अस्फहानी ६ तो० सबको खूब पीस छान कर सुर्मा बना लेना चाहिये। प्रातः दोपहर और सांय तीनों समय नेत्रों में लगावे, प्रथम नाक में सूंघ लें तब यह सुरमा लगावें। आधे वर्ष के निरन्तर उपयोग से बिना औपरेशन के ही दृष्टि आ जाती है और फिर औपरेशन की जरुरत नहीं रहती यदि थोड़े दिन का ही मोतिया विन्दु हो तो तीन सप्ताह में ही लाभ हो जाता है। इति

कवि बनना आसान नहीं है

[रत्नप्रकाश शारदा एम० ए० (द्वय)]

कवि बनना आसान नहीं है।
चाहे जितनी नकल निकालो।
चाहे कितनो अकल भिडालो॥
गला फाड़कर चीखो चाहे,
कविता फिल्मीगान नहीं है।
कवि बनना आसान नहीं हैं॥१॥

कवियों के से हाथ चलाओ।
अपना मुँह चाहे मटकाओ॥
करो नाज नखरे कितने ही,
इससे कुछ सन्मान नहीं है।
कवि बनना आसान नहीं है॥२॥

कवियों की सी मूंछ बनाओ।
चाहे लम्बे बाल रखाओ॥
और कहो कविराज स्वयंको,
पर जनता पहचान रही है।
कवि बनना आसान नहीं है॥३॥

रोज नई तुक बन्दी करलो।
नई कापियाँ गन्दी करलो॥
झूठ मूठ ही कवि कहलाओ,
कविता सडी दुकान नहीं है।
कवि बनना आसान नहीं है॥४॥

कलम और जिव्हा को घिसलो।
मैंढक जैसे चाहे फिसलो॥
टर्र टर्र करलो तुम कितनी,
कविता का अपमान नहीं है।
कवि बनना आसान नहीं है॥५॥

कवियों की है शान निराली।
कवियों की पहचान निराली॥
कवि बनना है कठिन समस्या,
यह कुछ शेरकी शान नहीं है।
कवि बनना आसान नहीं है॥६॥

❀ ❀ ❀ ❀

यहां जिसे देखिये साहब बना घूमता है। पूछो तो सीधे मुँह बात नहीं करता अपने को धन्ना सेठ का चाचा समझता है। 'बाप न मारी मेढकी, बेटा तीरनदाज'। घर में भूजी भाँग नहीं, पर ठाठ-बाट ऐसे नवाबो मानो सैकड़ों रनिवास बसाए बैठे हों।

बड़े लोगों की तो बात न पूछिये। गाड़ी से तले पैर नहीं धरते, लाखों के नीचे बात नहीं करते। जिससे अपना काम न निकलता हो उसकी ओर देखते तक नहीं। पर वहाँ के छुटभाइयों को भी उन से रत्ती भर कम न समझिये। बड़े मियाँ सो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ सुभान अल्ला। बिना जेब खनखनाये, बिना नोटों की झलक दिखाये मुँह उठाकर ताकते तक नहीं, पर हाँ, जहाँ कलदार फेंकिये कि झट झुक-झुक कर बिलैया डंडवत करने लगे कि वाह वाह। जिधर देखो उधर दिन रात रुपये की हाय पड़ी हुई है—हाय रुपैया हाय रुपैया।

खुदा खुदा न सही, राम राम करो।
जिसमें पैसा मिलै, वो काम करो॥

खाने पीने के नाम भी जब सियाराम ही समझिये। सच्चे के नाम भगवान या नारियल का पानी। दूध ऐसा कि जिसे दिया जाय उसके हाथ पानी ही पानी लगे। लंगोट कसकर डुबकी मारने पर भी उसे यही थाह न लग पावे कि—

"यह दूध में पानी है या पानी में दूध है।"

रबड़ी, मलाई, खुरचन, पेड़े का कहीं नाम नहीं। जहाँ देखा वहाँ बटाटे, बड़े और 'राईस प्लेट चालू आहे' की धूम है। कहीं भूल से किसी जलपान-घर में पैर पड़ गये तो सींगदाने (मूंगफली) के तेल की सड़ी गंध से खोपड़ी भिन्ना उठे।

यहाँ जिधर जाइये बस वाह की वाह है। आप दिन भर प्याले पर प्याले पिलाते रहिये पर कोई फूटे मुँह भी "नहीं" न कहे। किसी बम्बई वाले को अस्पताल में कहीं चीरा लगवाना पड़ जाय तो लहू के बदले चाय की धारा बह चले।

चौपाटी का बड़ा नाम सुन रक्खा था। पर दूर के ढोल सुहावने। वहाँ भी ढाक के तीन पात। वही बटाटे का चौप, वही पकौड़ा, वह भी मूंगफली के तेल में तला हुआ। कोई एक दिन खाले तो दस दिन वैद्य जी की देहली खूंदनी पड़ जाय, दीवाला पिट जाय। तानसा झील का पानी भी वह पहलवानी की पचीस बरस का जवान बरस भर जम कर पीये तो पाँच सौ बरस का बूढ़ा होकर ममी बनकर पिरैमिड की खोह में जा लेटे।

यह सीन कितना ग्रैंड है देखिये।
देह है या साइकिल का स्टैंड है॥

और वाह रे बंबई की हिन्दी—"तमकू किदर जाने का है? तूमेरा औरत खोली का बाजू है पड़ेला है। तुम कबी (कब) जाने का मगता है। ये तुमरी छाती (छतरी) नहीं तो किसी का (किसका) है। टपालका तपास करो नहीं तो तूमकू पगार नहीं देगा। रजा नहीं मिलेंगी। हमकूं बोला तो क्या करना। कोई वादा नहीं। मेरेकू किदर बी नहीं जही जाने का है। तुम खाली-पीली बूम क्या पाड़ता है। तुमेरा भाई किदर भी हो गया। कौन कू बोला।" इधर के लोग भी जब वहाँ पहुँच जाते हैं तो "पुस्तक" के बरले चौपड़ी बाँचने लगते हैं। गाड़ी में उन्हें "गर्दी" मिलती है, "भीड़" नहीं। "मैं वहाँ था" के बदले हम उधर होता"। कहते हैं। वहाँ कुछ टूट जाय, फूट जाय, बुझ जाय, बह जाय, खो जाय, रुक जाय, गिर जाय, पड़ जाय, चुक जाय या चल बसे, बस 'खलासा'। दिन में

डेढ़ सौ बार यह 'खलास' सुनते-सुनते आपका माथा खलास हो जाय। दस दिन यह हिन्दी कान में पड़ जाय तो अच्छा पढ़ा-लिखा हिन्दी का पंडित भी आगरे भेज दिया जाय, तेल में अफीम घोल कर पी रहे, संखिये की डली निगल जाय, पारा घूंट जाय।

यहाँ के लड़कों की बात न पूछिये। जिसे देखो वही 'आह सुरैया, वाह सुरैया' की तान अलापता हुआ मजनू का चचा बना ठंडी आहें भरता है या अपना पतलून ऊपर उठा कर "मैं आवारा हूँ" की टीप लगाता घूमता है। उसे कहीं कोई फिल्म ऐक्टर दिखाई भर दे जाना चाहिये कि बस वह "त्वमेव माता च पिता त्वमेव" कह कर हाथ में फूल-माला लेकर उस पर सरबस निछावर कर डाले। कोई सभा हो, नाटक हो बैठक हो, भोज हो, बस बंबई के छोकरे झट किसी फिल्म के डाइरेक्टर या ऐक्टर को सभापति बनाने के लिये टूट पड़ते हैं और कहीं भाग्य से कोई एक्ट्रैस मिल गई तब तो समझिये पौ बारह। उनके पिछले जन्म के सारे पुण्यों का ढेर इकट्ठा आ बरसा। देखने सुनने में सब ऐसे हल्के-फुल्के कि फूंक मार दो तो ऑक्सीजन भरे फुग्गे बनकर सात समुन्दर पार उड़े चले जायं।

लड़कों के भी कान काटती हैं यहाँ की लड़कियाँ। देखिये तो जान पड़े अभी लंदन से उड़ी चली आ रही हैं। अपना मुंह होंठ रंगे, घुटनों तक पैर उघाड़े, बालों में सौ-सौ लहरे दिये, तितली बनी, हाथ में बटुआ लेकर फर्र से बाहर निकल पड़ती हैं। फर्राट इतनी कि कहिये तो बात की बात में बम्बई को बेच आवें और टर्री ऐसी कि भला नाक पर मक्खी तो बैठ ले। बेचारे अकबर इलाहाबादी चिल्लाते मर गये।

तालीम लड़कियों की, जरूरी तो है मगर।
खातूनेखाना हों, वे सभा की परी न हों॥
जीइल्मोमुत्तकी हों वले उनके मुंतजिम।
उस्ताद अच्छे हों, मगर उस्ताद जी न हों॥

[लड़कियों को पढ़ाना तो चाहिये पर, पढ़ लिख कर वे घर की देवियाँ बनें। सभा की परी बनकर इधर उधर नाचती थिरकती न फिरें। उनकी देख-रेख करने वाले लोग अच्छे पढ़े-लिखे गुरू उस्ताद हों, पर उस्तादजी (साथ में सारंगी तबला बजाने वाले) न हों] जब प्रयाग की लड़कियों की चाल-ढाल देखकर वे इतने झल्ला उठे तो बम्बई की लड़कियों को देखकर वे हाराकिरी कर लेते।

इसलिये भइया हाथ जोड़े तुम्हारी बंबई को, नाम बड़े दर्शन थोड़े। तुम्हें फले तुम्हारी बंबई।

देखली यारो तुम्हारी बंबई।
हो मुबारिक तुमको सारी बंबई॥

गोकुल हमारा है

गौयें डकराय रहीं पेश कुछ जाय नहीं।
रक्षकों ने भक्षता कर उग्र रूप धारा है॥
दयाका प्रभाव घटा धर्म की सुनाई नहीं।
स्वारथ प्रचंड भयो अहंकार प्यारा है॥
गौरव गोपाल संग भारत का चला गया।
कहाँ शंकर देख रहा चैनको विसारा है॥
छाजू कहै धीर धरो ईश्वर सुनेगा टेर।
आवेगा कन्हैया तब गोकुल हमारा है॥

शंकरलाल कोड़ियागंज

अगहन पौष में क्या करें

[ले० कविराज डा० पन्नालाल वार्ष्णेय एम० एस० सी० ए०, अलीगढ़]

अगहन पौष के महीनों को हेमन्त ऋतु कहते हैं, इस ऋतु में रात बड़ी होने और दिन में सूर्य्य का प्रभाव कम होने से सर्दी अधिक पड़ने लगती है। और रात बड़ी होने के कारण रात्रि का किया हुआ भोजन शीघ्र पच जाता है। जिस से प्रातःकाल ही भूख लगने लगती है। इस लिये कोई लड्डू पाक आदि ताकतवर चीज खाना चाहिये। बाहरी शीत पड़ने से भीतरी गर्म्मी शरीर से नहीं निकल सक्ती, इस प्रकार भीतर ही तेज रहने से जठराग्नि भी बड़ी प्रबल रहती है, भारी पदार्थ भी हजम हो जाते हैं।

अगहन पौष में मीठे, खट्टे नमकीन, चिकने भारी और बलकारी भोजन करना, घी, दूध का पीना, गरम जल का प्रयोग, तेल की मालिश, कुस्ती, अग्नि का तापना गन्नेचूसना, नवीनअन्न खाना, गजक, रेवड़ी, केशर, कस्तूरी छुहारे गोला, चिरौंजी, पिस्ता, अखरोट, बादाम आदि मेवाओं का खाना, गरम स्थान में रहना, ऊन और रुई के देशी वस्त्रों का धारण करना अच्छा है।

इस ऋतु में अहित और देरी से भोजन करना दिन में सोना पुराना अन्न खाना, शीतल जल का प्रयोग करना, खुले नंगे पैर डोलना, ठंडी वस्तुओं का अधिक सेवन, सफेद और विदेशी पतले वस्त्रों का धारण करना अच्छा नहीं है।

इस ऋतु में आग्नेय दिशा का वायु चलता है, जोकि मधुर रस उत्पन्न करने वाला होता है। स्वभाव में ठंडा और घाव सूजन वाले रोगियों को अच्छा नहीं होता।

जो हरड का सेवन करते हों वह इस ऋतु में सोंठ के साथ करें। वीर्यपुष्टी, द्राक्षासव, मकरध्वज आदि बलकारी औषधें खाना ठीक है।

ब्रह्म विज्ञानांक

मारुति संजीवन का आगामी जनवरी मास में प्रकाशित होने वाला विशेषाँक। यह पठनीय साहित्य होगा उसकी विशेषतायें मनन करने पर ही अनुभव होंगी। इस अंक का मूल्य बारह आने होगा। वार्षिक ग्राहकों को उसी २) रु० मूल्य में मुफ्त मिलेगा, शीघ्र मंगाइये।

पता—मारुति संजीवन

नुनहड़, पो० असोखर (ग्वालियर)

जानने लायक बातें

[हरिश्चद्र आर्य 'नवीन' चदौसी]

१—बिना रोग कभी औषधि सेवन न करो।
२—वैद्य से रोग के प्रकट करने में शरम मत करो।
३—पुस्तक को धूप में रखकर मत पढ़ो।
४—उत्तर की ओर सिर और दक्षिण की ओर पैर करके न सोवे।
५—किसी की बुराई न करनी चाहिये।
६—किसी की झूंठी चीज न खाना चाहिये।
७—नवयुवकों को ७ घंटे सोना चाहिये।
८—जंभाई और छींक न रोकना चाहिये।
९—गर्म भोजन करके ठंडा पानी न पियो।
१०—खाली पेट अधिक कसरत मत करो

मिट्टी क्या करती है

[स्वामी अनन्तानन्द अकोला विदर्भदेश]

हमारे शरीर का बहुत सा भाग पृथ्वी तत्त्व (मिट्टी) का भी बना है, इस कारण शरीर पर यदि मिट्टी का भी प्रभाव पड़े तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। सफ़ाई का काम तो मिट्टी से होता ही है, लेकिन रोग नाश करने के लिये भी मिट्टी से अद्भुत फल मिलते हैं। नैटाल के लोग फोड़े फुन्सियों पर मिट्टी का प्रयोग करते ही हैं। जुस्ट नाम के एक जर्मनी ने मिट्टी के सम्बन्ध में बहुत कुछ अच्छा लिखा है उसका कथन है कि मिट्टी के उपचारों से असाध्य रोग भी मिट सकते हैं।

हमारे आयुवेद में लिखा है कि मिट्टी में विष चूष लेने का गुण है। एक वार एक आदमी सर्प का काटा हुआ जिसको लोगों ने मरा समझकर छोड़ दिया था, वह काटा हुआ मनुष्य जुस्ट ने मिट्टी में गड़वा कर फिर कुछ देर वाद निकलवाया तो उसे चेत हो आया लेकिन यह इलाज बीते हुंए किसी खास मौके पर करना चाहिये। ततैया और बिच्छू के काटे पर रितीली मिट्टी को ठंडे पानी में गूँथ कर पुलटिस की तरह पट्टी से बाँध देना चाहिये। इस इलाज से तुरन्त आराम होता देखा गया है।

महात्मा गाँधी लिखते हैं, कि मैंने मिट्टी के उपचारों से बहुत से रोगों पर स्वयं अनुभव किया है, और आराम हुआ है। कई वर्ष पहले मैं फ्रूट साल्ट लेता था तब ही अच्छी तरह रहता था। अक्स्मात ही सन् १९१४ में मिट्टी की उपयोगिता पर मेरा ध्यान गया तभी से मुझे फ्रूट साल्ट वग़ैरह किसी दिन न लेने पड़े। जिसे वृद्ध कोष्ट रहता हो उसे पेडू पर मिट्टी की पुलटिस बाँधने से वड़ा लाभ होता है। पेट में दर्द होता हो तो मिट्टी बाँधने से हल्का हो जाता है, सिर दर्द वालों के सिर पर मिट्टी की पुलटिस बाँधने से तत्काल लाभ हुआ है। आँखों के दर्द पर मिट्टी को बाँधने से दर्द मिट जाता है। चोट और सूजन पर मिट्टी की पुलटिस से दर्द बन्द हो जाता है। अतिसार और दस्त वाले के पेडू पर मिट्टी की पुलटिस बाँधने से दो-तीन दिन में आराम हो जाता है। पेडू और सिर पर मिट्टी के बाँधने से सख्त बुखार तक दो घंटे में कम पड़ जाता है। फोड़े, फुन्सी, खुजली, दाद वगैरह पर मिट्टी बाँधने से खून बहना बन्द हो जायगा। और आराम हो जाता है।

जले पर मिट्टी बाँधने से जलन कम हो जाती है, और सूजन भी नहीं बढ़ती। अर्श वाले को भी मिट्टी का बाँधना लाभ कारी है, वादी खुज़ली पर मिट्टी गुण-कारी है ही, दुखते हुये जोड़ों पर भी मिट्टी लगाने से तुरन्त लाभ होता है, इस तरह मिट्टी के बहुत से प्रयोग करने पर मुझे ज़ान पड़ा है कि घरेलू इलाज के तौर पर मिट्टी अनमोल चीज़ है। (शेष आगामी में)

लीडर लीला

जाति के धार्मिक वातावरण पर जिस प्रकार पौरोहित्य का एकाधिपत्य शासन है उसी प्रकार उसका राजनैतिक वायुमण्डल भी 'लीडर लीला' की विचित्र ध्वनि से पुतिध्वनित होता रहता है। देश में इतने अधिक लीडर बढ़ गये हैं कि उनकी कई पलटनें तैयार की जा सकती हैं। देश सेवा का दम भर कर जो व्यक्ति कुछ करना चाहता है वही अपने को स्वयम्भू लीडर 'स्वयं ही' अगुआ समझ लेता है। स्वयं वह अपनी बातों पर चले या न चले पर दूसरों को उनके अनुसार चलाने की बड़ी अभिलाषा रखता है। एक लीडर जनता को इधर खींचना चाहता है तो दूसरा उसे उस तरफ घसीटता है वह नेता साहब जमीन की बात कहते हैं तो दूसरे आसमान की ओर उड़ाना चाहते हैं। जनता किस की ठीक माने और किसको गलत! उसकी बिकट स्थिति है आखिर लीडरों की इस धाँधलेबाजी से तङ्ग आकर जनता भी परेशानी में पड़ जाती है।

हमारे देश में सौभाग्य से ऐसे कई नेता विद्यमान हैं जो अपने त्याग-तपस्या के कारण जनता के हृदयहार बने हुए हैं, लोग उन्हें अपना सिरमौर समझते हैं। बस यही महानुभाव नेतृत्व के सच्चे अधिकारी हैं। जो लोग अखबारों में अपने आने के समाचार छपा कर केवल अपनी ही हाँकते हैं वे श्रेष्ठ नहीं कहाये जा सकते।

अगर लीडरी का यही रोग आगे बढ़ा तो उस से बड़े बड़े अनर्थ होंगे यह एक पेशा बन जायगा और देश भक्ति की आड़ में धन कमाना बुरा काम न समझा जायगा। लीडरों की सृष्टि से ही काम चल जाय सो बात नहीं है जितने लीडर उतनी ही बातें और उतनी ही पार्टियाँ नजर आती हैं। परिणाम प्रत्यक्ष है धार्मिक संसार की तरह राजनैतिक जगत की दलबन्दी के दलदल में फस रहा है और सारी शक्तियाँ आपस के विचार में विनष्ट हो रही हैं। अपने २ को प्रधान बनने की इच्छा से पार्टियाँ बनाते हैं।

इस प्रकार एक दल में भी कई कई दिखाई दे रहे हैं। जनता विचारी क्या चाहती है इसे जानने या पूँछ ताँछ करने को कोई भूल कर भी कोशिश नहीं करता। कितने और कैसे खेद की बात है। लोक-तन्त्र शासन प्रणाली की स्थापना पर जोर दिया जाता है, मानसिक दासता दूर करने तथा स्वतंत्र सम्मति प्रकाशन पर लैक्चर झाड़े जाते हैं परन्तु यह भी लीडर अपने विरुद्ध सद्भाव से दी हुई किसी की सम्मति सुनने को तैयार नहीं है, हर एक अगुआ यही चाहते हैं कि मेरे शब्द वेद-वाक्य समझ कर माने जायं उन में कोई हस्तक्षेप न करें। हमारा तो विश्वास है कि जब तक देश में बढ़ते हुए स्वयम्भू लीडरों की और पार्टी बन्दियों की बाढ़ न रोकी जायगी तब तक देश का कल्याण कदापि नहीं हो सकता।

———

साहित्य सत्कार

आयुर्वेद सन्देश

प्रधान सम्पादक रसायनाचार्य पं० लक्ष्मी नारायणजी पाठक। सम्पादक—राजवैद्य पं० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित यह आयुर्वेद जगत का स्वतंत्र विचार प्रचारक पत्र है आयुर्वेद के आन्दोलन में २ वर्ष से बड़ा अच्छा कार्य कर रहा है, पाक्षिक होते हुये भी वार्षिक मूल्य ४) है। पाठक जी ने इसे प्रकाशित कर वैद्यों का बड़ा हित किया है नीचे के पते से अवश्य मंगावें। लक्ष्मी रसायनशाला नादानमहलरोड़, लखनऊ।

—०:०:०—

वेद वाणी

श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट (अमृतसर) की मासिक पत्रिका का वेदाकं। सम्पादक श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु व्यवस्थापक-युधिष्ठिर मीमांसक वार्षिक मूल्य ५रु० पृष्ट संख्या बड़े साइज में १६० इस अंक का मू०१रु०। इस अंक में प्रसिद्धि आर्य विद्वानों के लेख लगभग ३० हैं और ४-६ लेखो को छोड़कर शेष लेख एक से एक महत्वपूर्ण हैं आर्य संसार में ६वर्ष से पत्र वड़ी उन्नति कर रहा हैं प्रत्येक आर्य समाजों में तो अवश्य मगांना चाहिये। प्राप्ति स्थान-वेदवाणी कार्यालय पो० अजमतगढ़ पैलैस वनारस नं० ६।

[सुरेशचन्द्र सुहृद]

——

सचित्र आयुर्वेद

प्रधान सम्पादक—पं० रामनारायणजी शर्मा वैद्य। सहायक सम्पादक पं० सभा कान्त झा आयुर्वेद शास्त्री, प्रकाशक श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन १ गुप्ता लैन कलकत्ता। वार्षिक मूल्य ५रु०साधारणांक ८ आ०। यह पत्र ६ वर्षसे बराबर उन्नति कर रहा है। इसके प्रत्येक अंक बड़े बड़े विद्वानों के लेखों से परिपूर्ण होते हैं। सम्पादन भी बड़ी योग्यता पूर्वक होता है, छपाई सफाई चित्रादि से बड़ा सुन्दर पत्र निकलता है पत्र की श्रेष्ठता और उपादेयता में कोई कमी नहीं है। हिन्दी के आयुर्वेदीय पत्रों में इसकी समानता का कोई पत्र प्रतीत नहीं होता। प्रत्येक वैद्य को मगाँने योग्य है।

——

१५) रु० इनाम

मेरी उम्र ५० वर्ष की है और श्वास रोग रहता है। खुश्क खाँसी है। कलाकन्द रबड़ी खाने से कभी कम हो जाती है मैं भांग भी पीता हूँ चार वर्ष से तुतलापन भी हो गया है जो देशी विदेशी दवायें की हैं उनसे तुतलापन तथा श्वाँस खांसी के रोग नहीं गये। कोई वैद्य महोदय ऐसा उत्तम योग आगामी सुखमार्ग में छपावें कि जिससे यह रोग जॉय मैं उनको धन्यवाद पूर्वक २५रु० भेंट भेजूगाँ। ग्रा० नं० ८४०

——

नये समाचार

कन्या गुरुकुल सासनी

कन्यागुरूकुल सासनी यहाँ का वार्षिकोत्सव ता० २२-२३-२४ दिसम्बर को धूम-धाम के साथ होगा, बड़े बड़े भजनीक और उपदेशक पधारेंगे।

गुरुकुल वृन्दावन

यहाँ का महोत्सव ता० २४-२५-२६ दिसम्बर को होना निश्चित हुआ है। कई सम्मेलन होंगे। बड़े२ व्याख्यानदाता और उपदेशक पधारेंगे।

मुर्दे की आंखें

इटली-मिलन के एक अस्पताल में एक बूढ़ा पूजारी आया। वहाँ एक लड़की और एक लड़का अन्धे भी भर्ती थे। पुजारी ने मरने के पहले कहा कि मेरी आँखों का प्रयोग इन अन्धों के लिये किया जाय। पुजारी के मरते ही उसकी आँखों में से एक अन्धे लड़के को और एक अन्धी लड़की को लगा दी गई। लड़की तो अपनी माँ के साथ बगीचे में टहलने लगी है; किन्तु लड़के को कम लाभ हुआ है तथापि आशा है कि वह भी कुछ दिनों में देखने लग जायगा। जय आयुर्वेद उदयपुर

मंगलग्रह

वैज्ञानिकों का कहना है कि मंगलग्रह में ५५०००० वर्ग मील ज़मीन है।

विद्यार्थियों को शुभ सूचना

प्रायः देखा जाता है कि विद्यार्थीयों को उत्तमोत्तम शिक्षा मिलने पर भी उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। जिन विद्यार्थियों की आरोग्यता ठीक न हो या दिमाग कमजोर हो और परीक्षा में फेल हो जाते हों। या खून ठीकन बनता हो तो "यू० पी०केमीकल वर्क्स मोहनगेट अलीगढ़ को लिखें।"

सूचना

यदि आप आगामी साल सन् १९२७ को सुखमार्ग के ग्राहक रहना चाहते हैं तो १) रु० मनिआर्डर से भेजिये, वी० पी० नहीं भेजी जावेगी। रुपया आते ही जनवरी से अङ्क भेजना प्रारम्भ कर दिया जायगा।

अलीगढ़ प्रदर्शनी

११ जनवरी से १८ जनवरी तक होगी। वैद्य सम्मेलन ता० १३ को होगा, वैद्यों को अधिक संख्या में आना चाहिये।

गुरुकुल कांगड़ी

गुरुकुल कांगड़ी की रसीद पुस्तकें संख्या ४४६ से ४५० तक की चोरी चली गई हैं। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इन रसीद बहियों से कोई धन प्राप्त करे तो उसे न दिया जावे और उसका नाम पता गुरुकुल को सूचित करें। मुख्त्राधिष्ठाता गुरुकुलकांगड़ी

श्याम छाप की
असली और सच्ची दवायें

यू० पी० केमीकल वर्क्स अलीगढ़, भारतीय नागरिकों की आज से ही नहीं ? किन्तु पिछले ४० वर्षों से सेवा कर रहा है। कोटा तथा बिहार के भूकम्पों में, बंगाल के अकाल तथा महामारी में, प्रयाग के कुम्भ में बिना मूल्य दवायें बाँट कर जो लोक प्रियता प्राप्त की है वह आज किसी से छिपी नहीं। इसकी अनेक दवायें भारत सरकार से रजिस्टर्ड हैं। इन दवाओं का प्रयोग कर बहुत से बड़े-बड़े वैद्य, डाक्टरों, राजा, महाराजा तथा काँग्रेस के नेताओं ने हमें प्रसंशा-पत्र भेजे हैं, जिन्हें हम स्थानाभाव के कारण यहाँ प्रकाशित नहीं कर रहे, जो सज्जन देखने के इच्छुक हों वे वृद्ध सूचीपत्र मँगाकर देखें।

यू० पी० केमीकल की 'श्यामछाप' की ओषधियाँ सूठे नोटिसबाजों की तरह नहीं किन्तु इसकी दवायें उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध चिकित्सक एवम् 'ए' क्लास में रजिस्टर्ड वैद्यभूषण श्यामलाल 'सुहृद' एच० एल० एम० एस० के निरीक्षण में निर्माण की जाती हैं और बाजार में आने से पूर्व 'सुखरंजन औषधालय' में परीक्षा कर रोगियों पर प्रयोग की जाती हैं तथा लाभ दायक सिद्ध होने पर ही उन्हें पैक किया जाता है। केमीकल की सभी दवायें फौरन ही रोगों पर अपना प्रभाव दिखाती हैं खरीदने से पहिले रजिस्टर्ड 'श्याम छाप' अवश्य देखलें क्योंकि कुछ नक्कालों ने हमारी नकल भी करली है। यू० पी० केमीकल वर्क्स की गुणकारी दवायें सब सौदागरों पर मिलती हैं।

प्रधान प्रबन्धक

यू० पी० केमीकल वर्क्स, अलीगढ़।

भारत सरकार से रजिस्टर्ड

श्याम छाप की

सच्ची अनुभूत प्रसिद्धि औषधियाँ

रक्ता

यह प्राचीन काल की सुवर्ण, मृगाँग, मोती, कान्तिसार, हिमोग्लोविन फौलाद, जंतियाना और गुलूकोज आदि २ कितनी ही दवाओं के संयोग से और रसायनिक क्रियाओं द्वारा बनाई गई है, और समय समय पर इसकी जाँच भी होती आई है। इसका गुण ठीक वैसा ही होता है जैसा कि शरीर में रहने वाले रक्त का, इसी लिये इस का नाम "रक्ता" रक्खा गया है। यह मीठी स्वाददार है, दूध, चाय और जलमें मिलाकर पीते हैं।

खून की कमी

शरीर में रक्त (खून) की कमी होने से उत्साह घट जाता है। भूख कम हो जाती है। पेट गुड़ गुड़ाया करता है। चहरा और होट पीले पड़ जाते हैं। थोड़ी मिहनत से ही दिल धड़कता है। कमर में दर्द पैरों में थकावट, यहाँ तक कि शरीर के सब अङ्ग पीले और कमजोर पड़ जाते हैं। किसी काम को मन नहीं लगता, दिल, दिमाग़ और फेंफड़ों की कमजोरी तथा पाँडु, प्रमेह, स्त्री प्रदर व क्षय आदि रोगों के लिये यह 'रक्ता' नामक औषधि तैयार की गई है।

रक्ता

रक्ता से खून की कमी दूर होती है, क्योंकि यह शरीर का खून बढ़ाने में सबसे अधिक प्रमाणित हुई है। अपने शरीर को तोलकर फिर सेवन करो वजन बढ़ाकर शरीर को ताकतवर बनाती है। खून बढ़ाने और स्वास्थ्य तथा शक्ति स्थिर रखने की मीठी स्वादिष्ठ दवा है। भूख बढ़ाकर खाना आसानी से हजम हो जाता है। शरीर में ताकत बढ़ने लगती है। पीलापन दूर होकर साफ खून पैदा होता है। सूखा हुआ शरीर हरा होने लगता है। पाँडु, प्रमेह, धातु क्षीणता, स्त्री प्रदर, अर्श, संग्रहणी, तपैदिक आदि रोगों से आई हुई दुर्बलता तथा किसी भी कारण से कितनी ही कमजोरी होगई हो 'रक्ता' के सेवन से सर्वथा नष्ट हो जाती है। मूल्य २)

नोट—नक़ल करने वालों से सावधान रहें।

मेधावी

[बुद्धिवर्धक-परीक्षा पास कराने वाली]

यह 'मेधावी' बुद्धि वाले स्थान को सुधारने में अनुपम सिद्धि हुई हैं। दिमागी काम करने वाले वकील, बैरिस्टर, मुंसिफ, जज, मास्टर विद्यार्थी, उपदेशक, सम्पादक, तथा क्लर्कों के लिये प्राण प्रिय है। याददास्त बढ़ाती है। दिमागी कमजोरी मिटाकर ज्ञान तन्तुओं को ताकत देती हैं। नजले को दूर कर समय से पहले वालों को सफेद होने से रोकती हैं। यह मिठी दवा दूध या पानी से पी सकते हैं। मू० १।)

जोवल्टीन [स्वास्थ्यवर्धक]

यह शक्ति और स्वास्थ्यप्रद पदार्थ थकान और सुस्ती को दूर करता है। सुन्दर स्वास्थ्य के लिये पौष्टिक तत्व प्रदान करने के साथ ही साथ साथ मस्तिष्क शरीर और स्नायुओं को ताकत देता हैं। ताजी मलाई, दूध तथा अन्य पौष्टिक तत्वों से बनी है। दूध, चाय, पानी आदि पीने की चीजों में डालकर पीते हैं। मू० २॥)

सुखरंजन

यह बिना किसी अनुपान के बच्चों से लेकर बुढ्ढों तक के बुखार पेंठा, कफ, खाँसी, नजला, जुकाम, दमा, मुंह के छाले, तिल्ली, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द वायुगोला, जीमचलाना, बच्चों के हरे पीले दस्त, रोना, दूध पटक देना, अजीर्ण, हैजा, प्लेग, मलेरिया आदि रोगों की शर्तिया दवा है। गर्भिणी स्त्री और पशुओं के रोगों को भी लाभकारी है। मू० ॥)

वीर्य्य पुष्टी

वीर्य्य ही शरीर का सार और शक्ति बढ़ाने वाला होता है। इसके सेवन से अत्यन्त वीर्य्य बढ़ता है, कमजोरी, हौलदिली हड़कल सुस्ती, प्रमेह स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, शीघ्रपतन, आदि वीर्य्य के समस्त रोग दूर होकर शरीर में ताकत आती है। नामर्दी को दूर कर सन्तान पैदा करने के योग्य बनाती है। की० २)

मेदमार [मुटापा नाशक]

मोटापन बुरा होता है। यह दवा भद्दे मोटेपन को दूर करके शरीर को मजबूत और फुर्तीला बनाती है। सेरों वजन घटा देती है इसके सेवन से आप उम्र में १० वर्ष कम जँचने लगेंगे। मू० ६)

हड़पुष्टी

यह दवा उन दवाइयों के संयोग से बनी है जो कि हड्डियों को पुष्ट करने वाली है। शरीर के किसी स्थान की कोई हड्डी कमजोर हो, अपना पूरा काम न करती हो, थोड़े से घूमने फिरने में थक जाते हों, दाँत कमजोर होने लगे हों या हड्डियाँ चोड़ाई लम्बाई में छोटी रह गई हों तो यह दवा हड्डियों के सब विकारों को निकाल कर उनको पुष्ट तथा असली हालत में करती है। मूल्य ३)

बिजली की शक्ति

जिन स्त्री पुरुषों की काम वासना की शक्ति घट गई हो, स्त्री पुरुषों दोनों का संग करने का मन नहीं होता हो, तो इसको खावें। संभोग शक्ति बिजली के समान पैदा करतीहै। मू० १ शी० २॥)

कस्तूरी वटी (रुकावट को)

स्त्री सहवास से पूर्व खाने से शीघ्र पतन दूर होकर वीर्य बहुत देर तक रुक सकता है। अन्य कुछ विकार नहीं करती। मू० २॥)

गिनोरियल [सुजाक को]

यह सुजाक रोग की शर्तिया दवा है। पेशाब के समय होने वाली जलन और दर्द को सिर्फ २४ घंटे में आराम कर देती है। पीव आना बंद होजाता है। मूत्र साफ उतरने लगता है। मू० १॥)

जौहरी तिला

इसके लगाने से हर तरह की नपुंसकता, सुस्ती, ढीलापन व इन्द्रिय छोटी, पतली और टेढ़ी होना तथा नसों की बेकारी दूर होकर उसी समय इन्द्रिय में पुष्टता और दृढ़ता प्राप्त होती हैं। आप भी मँगाकर इस 'जौहरी तिला' का जौहर देखिये। मू० २)

उपदंशी [आतशक]

आतशक गर्मी में इन्द्री पर घाव होने से इन्द्री गल कर गिरने लगती है 'उपदंशी' को घावों पर बुरकने से २-३ दिन में घाव अच्छे हो जाते हैं।मू० ॥)

अर्शहरी [बवासीर को]

ये दवा बवासीर खूनी तथा बादी दोनों को दूर करती है। दस्त साफ लाती है। जिनको एक-एक पाव खून गया है और सब पीले पड़ गये थे गुदा में मस्से दर्द और सूजन आने लगी थी, उनको इससे आराम हो गया है। मू० २)

नवनारी

[स्त्रियों की ताकत को]

नवनारी सेवन करने से वृद्धा स्त्री भी असली आयु से कहीं कम यानी नवीन अवस्था वाली सी मालूम होने लगेगी। सोते समय सेवन करने से दस्त साफ़ लाने वाली ताकतवर औषधि है। स्वास्थ्य, सौन्दर्य और स्फूर्ति देती है। यदि आप यौवनपूर्ण और देखने में आकर्षक, जैसी पहले थीं वैसी ही स्वस्थ्य होना चाहती हैं तो नवनारी का सेवन करें। मूल्य २) चार शीशी मंगाने वाले को एक मुफ्त।

ऋतु कारक

(मासिक धर्म जारी करने की दवा)

रजस्वला माहवारी न होना या बिलकुल बन्द हो जाना, पेट में गुल्म, दर्द मालूम देना, चाहे किसी प्रकार से मासिक धर्म बन्द हो गया हो यह दवा खोलकर साफ करती है। गर्भवती स्त्री इसे न खावें, नहीं तो गर्भ गिर जायगा। मू० २) चार शीशी मंगाने वाले को एक मुफ्त।

स्त्री रोगा

स्त्रियों के कमर, पेढ़ू, जाँघ व शिर आदि में दर्द हड़कल, मिचली का होना, प्रदर दोष, सफेद, पीला, लाल, नीला पेशाव का जाना, तीसरे चौथे महीने हमल का गिरना और अरुचि को मिटाती है। दुर्बल शरीर को पुष्ट करती है। मू० २) चार शीशी मंगाने वाले को एक मुफ्त।

कठोरक

यह दवा स्तनों पर लगाने से उनका ढलकना बचाती है और ढलकते हुये ढीले लटके स्तनों को कठोर व सुन्दर शोभायमान बनाती है। मू० २)

संकोचक

(योनि व गुदा के रोगों की दवा)

इसे पानी में मिलाकर धोने से ढीली फैली हुई योनि को सिकोड़ कर असली हालत में करती है। ढीली नसों के कारण जो गर्भाशय निकल आता हो उसे भी सिकोड़ कर अन्दर करती है। गुदा व काँच का निकलना भगन्दर व अर्श—बवासीर के फूले हुए मस्सों को भी सुखा कर ठीक करती है, व दर्द मिटाती है। योनि का हर समय गीला व ढीला रहना श्वेत प्रदर जाना व दुर्गन्ध को दूर करती है। बारम्बार मूत्र का आना, योनि का दर्द, जलन और खुजली आदि रोग भी धोने से ही मिट जाते हैं। की० २)

थर्मामेटर मुफ्त

नयन सुधार

श्याम काजल

भीमसैनी कपूर, ममीरा, सफेदा, आदि आदि आँखों की बढ़िया औषधियों से बना हुआ परीक्षित और रजिस्टर्ड है ।

आँखों का दुखना, चिपचिपाहट, रोहे, सुर्खी, खुजली, पानी का बहना, दर्द धुन्ध आदि नेत्रों के समस्त रोगों को दूर कर ज्योति बढ़ाने के बहुत काम में लाया जाता है । प्रति दिन लगाने से आँखों में कोई रोग नहीं होने देता । छोटे बड़े सब के लिये लाभदायक है । एक डिब्बी पूरी गृहस्थी को वर्षों काम देती है । अगर आप अपने बच्चों को नेत्र रोगों से बचाना चाहते हैं तो 'श्यामकाजल' मंगाइये । आँखों को निरोग और सुन्दर बनाता है, मूल्य ≡) आना डि०, ३६ डिब्बी कमीशन काट कर कुल ५) रु० में दी जावेगी, और साथ में सच्चा आधी मि० का एक थर्मामेटर भी मुफ्त देंगे । २) रु० पेशगी भेजो ।

दशमूला

स्त्रियों के प्रसूत रोग और वात कफ के रोगों को दूर करने के लिये यह 'दशमूल का सत्त' मुख्य दवा है । रजोदोष, बुखार, खाँसी, दस्त, शरीर का दर्द, निर्बलता दूर होकर शरीर सुन्दर और पुष्ट हो जाता है । संतान होने के बाद बिना किसी शिकायत के भी स्त्रियों को इसका सेवन बड़ा लाभदायक रहता है । मात्रा पान पर रखकर सिर्फ २ रत्ती तक है । मूल्य १)

बत्तीसा का सत्त

बच्चा होने के समय स्त्रियाँ औटा कर या पोटली बना कर जिसे पीती हैं । हमने उसी बत्तीसा का सत्त तैयार किया है, जो कि स्त्रियों के मल, मूत्र और मासिक के खून की सफाई करता है, तथा अन्य रोग होने से बचाता है । इसके सेवन में कोई पीने की दिक्कत व परेशानी भी नहीं होती । गर्भवतियों को बच्चा जनने से पहले ही मँगाकर रखना चाहिये । कीमत १)

पुत्रदा

यह दवा गर्भ ठहरने के पीछे खिलाई जाती है तो लड़का ही उत्पन्न होता है । गलत साबित होने पर कीमत वापिस । मूल्य एक शीशी ५)

सन्तान बाधक

(सन्तान न होने की दवा)

जिनके बहुत सन्तान हो चुकी हैं और अब कमजोरी से सन्तान करना नहीं चाहतीं उनको खास तौर से यह दवा सेवन करनी चाहिए । इस से गर्भ न रहेगा । मासिक धर्म में भी कोई बाधा नहीं होती । की० २॥)

गर्भीना

जिस स्त्री के गर्भ न रहता हो, रह कर गिर जाता हो या गर्भस्थली शिथिल हो, जाने से हमल नष्ट हो जाता हो, तो उनको यह दवा शर्तिया गर्भ धारण कराती है और गर्भपात हरगिज नहीं होता । संतान हीन सैकड़ों स्त्रियाँ मँगा कर व्यवहार करती हैं । मूल्य ५) शी०

स्वप्नदोषा

सोते समय में वीर्य निकल जाने को स्वप्नदोष कहते हैं, जिससे शरीर और मस्तिष्क कमजोर होते हैं, इन गोलियों से स्वप्नदोष के लिये बड़ा लाभ होता है । मू० १॥) रु० चार शीशी मंगाने पर १ शीशी मुफ्त ।

दंत सफा मंजन

इसके इस्तैमाल से दाँतों में दर्द, बदबू मारना, टीस, पानी लगना, खून जाना, पायरिया, कीड़ा लगना आदि दाँतों की सारी व्याधियाँ दूर होकर सफेद हो जाते हैं । मू० ।) ६ शीशी मंगाने सेएक मुफ्त

कृश्नसाल्ट

इसमें कई प्रकार के ऐसे लवण मिले हैं जो कि स्वास्थ्य को लाभप्रद हैं यह पेट, जिगर, तिल्ली, आँत, गुरदे, मसाने और नस आदि के रोगों में शीघ्र लाभ देता है । पेट की गर्मी, कब्ज बदहजमी, बुखार पांडु, पीलिया, मिट्टी खाने के विकार, पथरी गठिया, जोड़ों का दर्द और शीथ को दूर करता है । पेशाब और दस्त साफ लाता है । भूख लगा कर, शरीर स्वस्थ्य करता है । पेट में कोई गड़बड़ मालूम पड़े बस इसे पीजिये फौरन आराम होग । मूल्य २)

बादाम का सत्त

खुशकी, कब्ज सिर घूमना, नींद न आना, आँखों की कमजोरी को नजला, खाँसी, जुकाम को लाभदायक है) बार बार मूत्र के आने को रोकता है, ताकत और काम शक्ति को बढ़ाता है । मूल्य ॥) चार शी० मंगाने पर १ शी० मुफ्त ।

थर्मामेटर मुफ्त

ऐस्ट्रो—दर्दमार

इस रजिस्टर्ड दवा के खाने से ही सिर दर्द, आधा शीशी का दर्द, नाक, कान और दाँत का दर्द, निमोनियाँ पसली का दर्द, एड़ी का दर्द, कौनी का दर्द, उँगलियों का दर्द गठिया का दर्द, चोट व फोड़ों का दर्द, शरीर की हड़कल बेचैनी, टीस, चमक, नस की लहर, वायु का दर्द, जानवरों के काटे का दर्द, किसी प्रकर से किसी भी जगह में बाहर या भीतर कैसा भी दर्द हो, रोगी घबरा रहा हो, इसे देने से पहली ही खुराक में फौरन ही आराम पहुंचना शुरू होगा । नजला, जुकाम, सर्दी, बुखार मलेरिया, नींद न आना और बेचैनी को शीघ्र दूर करती है । छोटे बड़े पुरुष, स्त्री, बच्चे सभी को वरदान स्वरूप है । दो खुराक के पेकट की कीमत —)

नोट—धरमार्थ बाँटने वालों को २००खुराक के १०० पैकट का दाम ५)

बेचने वालों को २५० पैकट ११॥) में साथ में कलैंडर साइनबोर्ड और बुखार देखने का असली थर्मामेटर मुफ्त । मंगाने के साथ २) पेशगी भेजें ।

अम्बरी तिला

इन्द्री छोटी, टेढ़ी और ढीलेपन आदि नपुंसकता के दोषों का दूर करने में यह अन्य तिलाओं से बढ़कर बना है एक बार अवश्य परीक्षा करें । की० ४)

घुटी का मीठा सत्त

बच्चों के रोग दूर करने की प्रसिद्ध औषधि है । मीठा होने के कारण बच्चे खुशी से पी लेते हैं । अन्य बहुत सी घुटियों की तरह यह बिगड़ती नहीं । बालकों के बुखार, खाँसी, अजीर्ण, दूध डालना, रोना, दस्त होना और पछरुए आदि प्रत्येक रोगों को दूर करता है तथा दुर्बल बालकों को मोटा ताजा बनाता है । की० ।) चार शीशी मंगाने से एक मुफ्त, एक दर्जन २) में ।

कृमीमार [कीड़ों की दवा]

बच्चों के पछरुए होने से गुदा चुन-चुनाती है । पखाने की जगह लाल होजाती है । बच्चे रोते ही रहते हैं । बड़ों के कीड़े और पटेरे हो जाते हैं । चुनचुने पछरुये, कीड़े पटेरे हर तरह की क्रमियों को मार कर दस्त के साथ सहज में निकाल देती हैं की० १)

मंगाने का पता—यू० पी० केमीकल वर्क्स, अलीगढ़ ।

अपना इलाज आप करलो समस्त रोगों की एक दवा ।

❀ जेबी डाक्टर ❀

बाल, वृद्ध, युवा, स्त्री और पुरुषों के बड़े-बड़े कठिन रोगों को जादू की तरह फौरन खो देती है। जैसे हैजा, जुकाम सर्दी, खाँसी, दस्त, बदहजमी, पेट दर्द, दाँत और पसली का दर्द, बुखार आदि को दूर करता है। सफर में बाजारी खराब घी खाने के विकार, जगह २ का पानी माफिक नहीं, पड़ता हो, शरीर में सिर से लेकर पैरों तक बाहर या भीतर कोई कैसा ही रोग हो, इसके सेवन से शीघ्र ही लाभ होता है जानवरों के काटे व फोड़े-खाज, खुजली पर फौरन असर करता है। जेबी-डाक्टर पास होने से डाक्टरों के पास नहीं दौड़ना पड़ता। मू० ।॥) पाँच शी० मंगाने पर एक शी० मुफ्त

बाल सफा

इससे ३ मिनट में बाल साफ होकर शरीर चिकना, कोमल होजाता है। दाद को भी उड़ा देता है। लगाते ही खुजली कम होती है। मू०≡) आना में बेचने को तीन दर्जन शीशी ३) में

बाल बत्सल

इसके लगाने से बच्चों का शरीर पुष्ट होता है, और वे मजबूत होते हैं। खून की वृद्धि होती है बुरी हवा का असर दूर रहता है। शरीर का सूखना, भूसी सी उड़ना, खुजली, मरोरी व फुन्सी निकलना आदि चर्म रोग भी दूर होते हैं। सूखा शरीर सुन्दर, पुष्ट, बलवान और कान्तिवान हो जाता। कां०॥)

शिर सुगन्ध

यह सर धोने का ठंडा और खुशबूदार मसाला है। बालों की जड़ों को मजबूत करके लम्बे मुलायम और काला बनाता है। शिर की गर्मी और नजला को दूरकर बालों को सफेद होने से बचाता है। मूल्य ।॥) पाँच शी० २॥)

आंखों का अंजन—सुरमा

मोती, भीमसैनी कपूर, ममीरा, शुद्ध सुरमा आदि अनेक ओषधियों से यह काला सुरमा बनाया है। इसके लगाने से नजर की कमजोरी, सुर्खी, धुन्ध, जाला, फुली, रतौंध, बालों का उखड़ना इत्यादि नेत्रों के समस्त रोग दूर होते हैं। नेत्रों की ज्योति तेज होती है। सलाई सहित मूल्य ।॥) पाँच शी० २॥)

शम्बक

मरोरी, दाद, खाज, फोड़े फुन्सी, घाव पर लाभप्रद है। चूहे, बिल्ली, मकड़ी, बर्र, बिच्छू आदि जहरीले कीड़ों के डङ्क तथा आग से जले का घाव, कटे स्थानों से खून का बहना, चोट मोच, और हर तरह के दर्दों पर लगाने से फायदा होता है। प्रत्येक गृहस्थी को रखने योग्य है। मू० ॥) पांच का २)

खाज मार

यह हर प्रकार की खुजली खाज की अक्सीर दवा है। बाजार में बिकने वाली दवाओं से कहीं अधिक गुणकारी साबित हुई है अच्छी होने के कारण सैकड़ों पंसारी, अत्तार और दवा बेचने वाले इसे मँगा कर बेच रहे हैं। मूल्य ॥)

वृहत् योगराज गूगल

सप्त धातु मिश्रित यह वातव्याधि, हर प्रकार के दर्दों की सर्वोत्तम औषधि है। गठिया, लकवा, वायु दोष के साथ होने वाले पाँडु, प्रमेह, धातु रोग, गुल्म, बातरक्त, मुटापा, और बन्ध्या दोष को दूर करने के लिए भी उत्तम है। की० २)

चन्द्र प्रभावटी—प्रमेह को

यह सर्व प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, पथरी, मूत्रमार्ग के रोग, अर्श, मलावरोध, वीर्य दोष के साथ होने वाला कमर दर्द आदि व्याधियाँ नष्ट कर बल वीर्य को बढ़ाने वाली है। की० २)

असली च्यवनप्राश

हमारा च्यवनप्राश अष्टवर्ग मिश्रित शास्त्रोक्त ढंग से बना है। इसमें केलसियम और लोहा अधिक मात्रा में रहता है यह हर प्रकार के फेफड़े के रोग, संग्रहणी, प्रमेह, तपैदिक, जीर्णज्वर आदि पुराने से पुराने रोग दूर कर सूखे शरीर को भी मोटा ताजा बनाता है। वैद्यक, डाक्टरी और यूनानी में इसके समान अन्य कोई औषधि नहीं है रजिष्टर्ड श्यामछाप देखलें। की० १ पाव की शीशी १॥)

असली द्राक्षासव

हमारा द्राक्षासव अंगूरी दाखों द्वारा शास्त्रोक्त ढंग से बना हुआ अति स्वादिष्ट होने के साथ साथ बल, वीर्य, साहस और स्फूर्ति बढ़ाता है रजिस्टर्ड श्यामछाप देखलें। की० २) फी बोतल।

लोहासव १ बोतल २) छोटी॥-)अशोकारिष्ट २)छोटी ॥-)
कुमारीआसव २) छोटी ॥-) दशमूलारिष्ट २) छोटी ॥-)
त्रिफलासव २) छोटी ॥-) अमृतारिष्ट २) छोटी ॥-)

नोट—अन्य आसव या आयुर्वेदिक औषधें चाहिये तो बड़ी सूची मंगावें या औषधि का नाम लिख भेजें। एक दर्जन बड़ी या छोटी मंगाने पर चौथाई कमीशन मिलेगा। आसव की आधी कीमत आर्डर के साथ भेजें।

सिद्ध मकरध्वज चन्द्रोदय

यह आयुर्वेद की सर्वोत्तम औषधि है। इसके समान बलकारक और मनुष्य के रोगों का नाश करने वाली दवा आज तक दुनिया में दूसरी नहीं बनी। वह त्रिदोष, राजयक्ष्मा, धातुक्षीणता नपुंसकता, आदि बड़े २ रोगों को नष्ट करती है। शरीर को पुष्ट बनाती है। बुढ़ापा शीघ्र नहीं आने देती। मूल्य ३ माशे का ६) आठ खुराक २)

शुद्ध शिलाजीत

आजकल शिलाजीत जैसी प्रसिद्ध और गुणप्रद औषधि का असली मिलना कठिन हो गया है। यह बात आप से छिपी नहीं है। इसी से हमने बद्रिकाआश्रम से शिलाजीत मँगाकर शास्त्र विधि से शोधन किया है। वीर्य विकारों को दूर करता है। मूल्य १ तोला १।)

श्याम वाण चूर्ण

बड़े-बड़े हकीम, डाक्टर, रोगों की जड़ अपच बतलाते हैं। इस चूर्ण से पाचन शक्ति बढ़ती है। खाना हजम करके नया खून पैदा करता है। पेट फूलना, खट्टी डकार आना, भूक न लगना, बदहजमी को दूर करके दस्त साफ लाता है। मूल्य ।) शी० छै शीशी मंगाने से सवा रुपये में।

शास्त्रोक्त भस्में विधिपूर्वक बनी

हमारे यहाँ असली भस्में मिलती हैं। धर्मार्थ औषधालयों को पूरा कमीशन दिया जाता है। नियम मंगा देखें।

सुवर्ण माल्ती १ तो० २०)	चाँदी भस्म १ तो० ३)
सुवर्ण वंग १ तो० ४)	पारद भस्म १ तो० ७)
लोह भस्म १ तो० २)	मोती भस्म १ नं० १ माशे ५)
प्रवाल भस्म १ तो० १)	अभ्रक भस्म १ तो० २)
वंग भस्म १ तो० १)	स्वर्ण माक्षिक १ तो० १)
पीतल भस्म १ तो० १)	मंडूर भस्म १ तो० ॥)
भीमसैनी कपूर १ तो० ४)	चौंसठ पहरा पीपल १ तो० ४)

नोट—अन्य रस भस्म भी मिलती हैं। नाम लिख कर भेजें।

अन्य परीक्षित औषधें

मुंहपाकी:—मुंह के छालों की दवा मू० ≡)
दूधला:—स्त्रियों के दूध बढ़ाने की दवा मू० २)
गर्भ रक्षक: —गर्भ गिरने से रोकती है। मू० १॥)
सौंफ सिंधु:—अर्क सौंफ बनाने का सौंफ का सत्त मू० ॥)
छुतहरी:—बिगड़े बुखारों की दवा मू० ॥)
नस्या:—मृगी, हिस्टीरिया और दौड़े की दवा मू० १)
मूत्रला:—पेशाव उतारने की दवा मू० १॥)
सत्तसालसा:—खून साफ करने की दवा मू० १)
नशानाश:—हर प्रकार की नशों को छुड़ाने की दवा मू० १)
असली नमक सुलैमानी:—हाजमें का चूर्ण, की० ≡) शी०
भोजन सुधार मसाला:—की० ।)
अर्क कपूर:—हैजा, दस्तों की प्रसिद्ध दवा की ॥)
जुकामी:—जुकाम, नजले की दवा की० ≡)
घोड़ों का मसाला:—कुरकुरी पेट विकारों को, की० १)
श्याम प्राईवाटर:—बालकों की ताकत को की० १)
सत्त लाल शरवत:—बाल रोग नाशक की० १)
घावभरी:—जख्म और फोड़ों को खाने की दवा की० २)
गृञ्जन:—चाय की तरह पीने से शरीर पुस्ट होता है। की० १॥)
स्वदेशी कुनैन: —बुखार मलेरिया व तिल्ली की परीक्षित की० ॥)
जापे का तेल:—स्त्री के लगाने से शरीर पुस्ट होता है। की० ॥)
लम्बी:—लम्बे बड़े होने की दवा की० ४)
दाँत दर्दी:—लगाते ही दर्द मिटाती है। की० ।)
कर्ण तेल:— कान के रोगों की दवा। की०।)
स्वेदक:—पसीना लाने की दवा की० ॥)
जुकामी हुलास:—सूंघने से जुकाम नजला झड़ता है। की० ≡)
लवणभास्कर चूर्ण—मन्दाग्नि, अपच, दस्त और पेट विकारों की० ।)
गंडूषक—मुँह, गले, जीभ के रोगों को मू० ॥)
शकरीना—मूत्र में शकर जाना बन्द करती है। मू० २)
जुलाबी चूर्ण—दस्त करने की प्रसिद्ध दवा मू० ॥)
सुन्दरता का बीज—सुन्दर सन्तान पैदा करने को। मू० ५)

सुखमार्ग बेचने के लिये एजेन्ट चाहिये

बहुत से छोटे-बड़े शहरों, कस्बों, मण्डियों और बस्तियों में 'सुखमार्ग' बेचने के लिये एजेन्ट बन चुके हैं और वे काफी तादाद में 'सुखमार्ग' बेच कर, स्वार्थ और परमार्थ दोनों को सिद्ध कर रहे हैं। फिर भी हमें कुछ ऐसे देश भक्त एजेन्टों की आवश्यकता है, जो उन स्थानों में जहाँ कोई एजेन्ट नहीं हैं 'सुखमार्ग' की एजेन्सी लेकर अपने स्वार्थ के साथ ही देश का भी कुछ उपकार साधन कर सकते हैं नियम बड़े सरल हैं। कमीशन भरपूर मिलता है। पत्र व्यवहार कीजिये।

पता—सुखमार्ग कार्यालय कैमीकल प्रेस, मोहनगेट अलीगढ़।

हमारे यहां बिकती है।

पेटेन्ट दवायें और गीता प्रेस की पुस्तकें

महाशय मोहनलाल मोहनगेट, अलीगढ।

नया कलैंडर

नीचे के पते पर पत्र भेज कर मुफ्त मंगाइये।

यू० पी० कैमीकल वर्क्स, २० अलीगढ़।

यदि आप

को कोई ऐसा छिपा हुआ रोग है जिसे आप शरम के कारण किसी से कह नहीं सकते, तो हमें लिखिये, और साथ में उत्तर के लिये ८) का टिकट भेजिये। हम आप को ऐसी सम्मिति देंगे कि आप का रोग घर बैठे ठीक हो जायगा। पता—

यू० पी० कैमीकल वर्क्स, २० अलीगढ़।

दफ्तरों के लिये

तार से सीने की मशीन

लैटरपेपर, रसीदबही, अखबार, पुस्तकें आदि को मिनटों में हजारों सीं देती है। मू० ५) रु०। आर्डर के साथ २) रु० पेशगी भेजें।

पता—कैमीकल प्रेस, मोहनगेट अलीगढ़।

रामचन्द्र वैद्यशास्त्री की रजिस्टर्ड औषधें

कांग्रेस राष्ट्रपति द्वारा प्रशंसित

बालरक्षा घुटी

को, आल इण्डिया वैद्य सम्मेलन ने प्रमाणित किया है कि यह अनेक बालरोगों को नष्ट कर उन्हें पुष्ट बनाती है। दांत सुगम निकलते हैं मीठी है। छोटी शीशी ।≈ बड़ी शीशी ॥≈ डाक व्यय ३ शीशी तक १) रु० परीक्षा कीजिये

आठ हजार एजेन्ट बन चुके अब थोक व्यापारी बन रहे हैं। नियम मांगें।

मुफ्त ५ सज्जनों के पूरे पते लिखने पर "मदनशान्ता" उपन्यास मुफ्त

सुधावर्षक औषधालय नं० १ अलीगढ़

सरकारी कानून में

अपने ट्रेडमार्क, डिज़ाइन, अविष्कार, फर्म, सुसाइटी, कम्पनी को सरकार से रजिस्टर्ड, पेटेन्ट, लिमिटेड व औषधि को सरकारी लैबोरेटरी से परीक्षा व रजिस्टर्ड कराने के लिये नियम व फ़ार्म मंगाइये।

भारत चैम्बर आफ़ इन्डस्ट्रीज लि०
अलीगढ़ (यू० पी०)

SUKHMARG Regd. No. A 220

सुखमार्ग

वार्षिक मूल्य १)

सर्व विषय सम्पन्न, अपूर्व सामाजिक मासिक पत्र

स्वास्थ्य और सम्पत्ति प्राप्ति को पढ़ें

पता—सुखमार्ग कार्यालय, केमीकल प्रेस मोहनगेट २०, अलीगढ़।

नोट—पाँच ग्राहक बनाने वालों को पत्र मुफ्त में पहुँचा करेगा।

सेवा में,

श्री सम्पादक श्री "वेद प्रकाश" का पत्र

गोविन्दराम-हासानन्द बुकसेलर

नई सड़क - दिल्ली

मुद्रक एवं प्रकाशक श्यामलाल 'सुहृद', केमीकल प्रेस, मोहनगेट, अलीगढ़।